ISSN–2277- 8721

EIIRJ

Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II

Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

महावीर दर्शन

* प्रा. रैना राकेश हिंगर ,

* आदर्श कला व वाणिज्य महाविद्यालय,बदलापूर

सारांश :

धर्म कोई कल्पना का विषय नहीं है I धर्म कोई दार्शनिक पांडित्य का विषय नहीं है I धर्म जीवन निर्माण की प्रक्रिया है जिस प्रकार शरीर का निर्माण के लिए भोजन की आवश्यकता है इसी तरह मनुष्य के जीवन के लिए धर्म की भी उतनी ही आवश्यकता है I दर्शन जीवन की व्याख्या है I दर्शनशास्त्र का जीवन के सभी पक्षों से संबंध है जीवन संबंधी ज्ञान विवेचन चिंतन दर्शन से पृथक नहीं किया जा सकता I संसार में कोई मनुष्य बिना कर्म के नहीं रह सकता I खाने पीने के लिए आजीविका के लिए कर्म करना ही पड़ता है I कुछ कर्म अच्छे होते हैं कुछ कर्म बुरे होते हैं अच्छे कर्म आत्मा को उन्नत बनाते हैं इसलिए आत्मा को विकारों से बचाने की आवश्यकता है I राग द्वेष के वातावरण से बाहर आकर जो सास ली जाए तो सुगंध सभी तरफ फैल जाएगी , अतः भगवान महावीर स्वामी के अनुसार कोई भी आत्मा भले ही वह अपने जीवन के कितने ही नीचे स्तर पर क्यों न हो भूलकर भी उससे घृणा व द्वेष नहीं करना चाहिए क्योंकि ना जाने कब उस आत्मा में परमात्मा भाव की जागृति हो जाए I प्रत्येक आत्मा अनंत गुणों का भंडार है छोटे कीड़े से लेकर हाथी तक पर गंदी नाली के कीट से लेकर त्रिलोक में रहने वाले इंद्र तक सभी जीव सूख चाहते हैं I किसी ने कहा है 'सुख दिया सुख होते दुख दिया दुख हो आप ह ने नहीं अवर को तो आपको ह ने न कोए '

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

सुख की अभिलाषा तो सभी को है पर सुख कहां मिलेगा ,कैसे मिलेगा ,धर्म के अनुसार सुख देने में ही सुख है Iभगवान महावीर वस्तु वादी नहीं भाव वादी थे अतः उनका अपरिग्रह सिद्धांत वस्तु में नहीं ममता को मूर्छा में है एकांत अस्ति या एकांत नस्ती जैसा कुछ भी उनके दर्शन में नहीं था I भारतवर्ष में दार्शनिक विचारधारा का विस्तृत विकास हुआ इनमें कुछ मुख्य वाद है :

काल वाद 2. स्वभाव वाद 3. कर्म वाद 4. पुरुषार्थ वाद 5. नियतिवाद

भगवान महावीर का कहना है कि पाँचों ही वद अपने स्थान पर ठीक है संसार से जो भी कार्य होता है वह इन पांचों को समन्वय से होता है जिसे उन्होंने अनेकांत दर्शन के नाम से प्रतिपादित किया

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS Original Research Article

अनेकांतवाद वस्तुतः मानव का जीवन धर्म है समग्र मानव जाति का जीवन दर्शन है आज के युग में इसकी ओर भी आवश्यकता है I समानता और सह अस्तित्व का सिद्धांत अनेकांत के बिना खरा नहीं उतरेगा I

कठिन शब्द: *विकार = आत्मा के दुर्गुण अभिलाषा = चाहना करना द्वेष = जलन कर्म = कार्य त्रिलोक = तीनों लोक*

महावीर दर्शन:

इस विराट विश्व की व्यवस्था का मूल आधार है सत अर्थात सत्ता विश्व की सूक्ष्मतम सीमाओं की खोज में उसकी अज्ञात अतल गहराइयों को जानने की दिशा में मनुष्य अनादिकाल से प्रयत्न करता आ रहा है विश्व सत्ता के दो मौलिक रूप है जड़ और चेतन l चेतन संवेदनशील है अनुभूति स्वरूप हे किंतु जड़ भाग सर्वथा शक्ति शून्य है l चेतन धर्म ग्रहण करता है l धर्म कोई कल्पना का विषय नहीं है धर्म जीवन को बनाता है l धर्म के अलग अलग नाम होने से धर्म अलग नहीं होता है जैसे पर्वत शिखर से बहते हुए जलधारा समुद्र तक पहुंचते पहुंचते कई अलग अलग नामों से जानी जाती है पर जल तत्व तो एक ही रहता है, उसी प्रकार धर्म के नाम पर सम्प्रदाय बने, मनुष्य जाति ने आपस में लड़ाई की। किन्तु धर्म संघर्ष के लिए नहीं शांति के लिए है, तोड़ने के लिए नहीं जोड़ने के लिए है।

भगवान महावीर ने कहा कि धर्म है अहिंसा, हिंसा की, घृणा प्रतिशोध की मनोवृत्तियों से ऊपर उठना धर्म है l वैराग्य त्याग साधना धर्म है l

दर्शन जीवन की व्याख्या है जीवन संबंधी ज्ञान विवेचन चिंतन को दर्शन से पृथक नहीं किया जा सकता है l दर्शन का जन्म जिज्ञासा से हुआ है भारत के विभिन्न दर्शनों ने भिन्न भिन्न प्रकार के तत्व स्वीकार किए हैं जैन आगमों में नौ तत्व को माना है वे मुख्यतः इस प्रकार है जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, बंध, निर्जरा, और मोक्ष l इनमें दो तत्वों का मुख्य स्थान है जीव और अजीव l संसार में कोई भी जीव बिना कर्म किए नहीं रह सकता है उसे खाने के लिए पीने के लिए चलने फिरने के लिए जीवन को चलाने के लिए कर्मों को करना ही पड़ता है l चिंतकों ने अपने अनुभव से सिद्ध किया है कि अच्छे कर्म करने चाहिए ताकि हमें फल भी अच्छा मिले l

भारत में मुख्य रूप से पांच दर्शनो का विकास हुआ है:

१) काल बाद

२) स्वभाववाद

३) कर्मवाद

४) पुरुषार्थ वाद

५) नियतिवाद

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS Original Research Article

१) **काल वाद** : यह दर्शन बहुत पुराना है l कालवाद के अनुसार संसार में जो भी हो रहा है वह काल के अधीन है l समय आने पर ही कर्म अच्छा हो या बुराउसका फल प्राप्त होता है l एक बालक आज जन्म लेता है परन्तु वह आज चल नहीं सकता है बोल नहीं सकता अपने कार्य स्वयं नहीं कर सकता है पर समय आने पर वह बोलेगा व अपने कार्य स्वयं करेगा, इसलिए समय आने पर ही कार्य सिद्ध हो सकते हैं lआम का वृक्ष आज लगाया है पर फल तो समय आने पर ही मिलता है, अतः मनुष्य कुछ नहीं कर सकता समय आने पर ही कार्य सिद्ध होता है l

२) **स्वभाववाद**: इसके अनुसार जो भी संसार में हो रहा है वह वस्तुओं के अपने स्वभाव से हो रहा है l स्वभाव के बिना काल कर्म नियति आदि कुछ भी नहीं कर सकते l आम की गुठली में आम के वृक्ष होने का स्वभाव है इसी कारण वह आम का पेड़ बनता है, हम चाहकर भी नीम के बीज से आम उत्पन्न नहीं कर सकते हैं I यह असंभव है I नीम के पेड़ को कितना भी घी और गुड़ से सींचने पर भी वह मीठा नहीं हो सकता है क्योंकि उसका स्वभाव ही कड़वा है I अतः स्वभाव को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है प्रत्येक वस्तु अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करती है स्वभाव के बिना काल नियति कर्म कुछ भी नहीं कर सकते हैं

३) **कर्मवाद** : इस मत के अनुसार काल स्वभाव पुरुषार्थ सब नगण्य है संसार सर्वत्र कर्म का ही एकछत्र साम्राज्य है मनुष्य में जो भी भेद हैं वह सब कर्मों के हिसाब से है एक माँ के दो पुत्र भी समान नहीं होते हैं उनमें से एक बुद्धिमान हो सकता है तो दूसरा मूर्ख हो सकता है , एक सुन्दर हो सकता है तो दूसरा कुरूप हो सकता है , एक दानी हो सकता है दूसरा लालची हो सकता है I इन सब भेद का मुख्य कारण कर्म है I मनुष्य के नाते सब बराबर है , पर मानव मानव में बहुत अंतर होता है और इन सब का प्रमुख कारण कर्म ही है इसलिए कहा गया है :

गहना करणों गतिः अर्थात करम की गति बहुत गहन होती है I

कर्म वाद चिंतन है जिसके अनुसार सभी आत्माओं की सुख दुख सम्पत्ति विपत्ति उच्च नीच आदि जितनी भी अवस्थाएं दिखाई देती है उन सभी में काल एवं स्वभाव आदि की तरह कर्म भी एक प्रबल कारण है I अध्यात्म शास्त्र के मर्मस्पर्शी संत देव चंद्रजी ने कहा है कि :

रें जीव साहस आदरो मत थावो तुम दिन , सुख दुख संपदा आपदा पूर्व कर्म अधीन I

४) **पुरुषार्थ वाद**: पुरुषार्थवाद के अनुसार पुरुषार्थ के बिना संसार में कोई कार्य सफल नहीं हो सकता है , जो भी संसार में हो रहा है , जैसा भी हो रहा है उसमें पुरुषार्थ छिपा हुआ है I संसार में मनुष्य ने जो भी प्रगति की है वह प्रबल पुरुषार्थ से की है I काल कहता है कि समय आने पर सब कार्य होते हैं , परंतु उस समय यदि पुरुषार्थ न हो तो क्या वह कार्य हो जाएगा ? आम के बीज में आम पैदा करने का स्वभाव है परंतु क्या पुरुषार्थ के बिना अगर वो आम की गुठली ऐसे ही पड़ी रहे तो

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS Original Research Article

आम का पेड़ लग जायेगा ? क्या कर्म का भी फल क्या बिना पुरुषार्थ के अपने आप बैठे बैठे मिल जायेगा ? आज मनुष्य हवा में उड़ रहा है , परमाणु बम जैसे महान आविष्कार करने में सफल हो रहा है तो कि यह सब मनुष्य का पुरुषार्थ हीं है I एक मनुष्य कई दिनों से भूखा है , कोई उसके सामने मिठाई का थाल भर के रख देता है वो नहीं खाता है तो क्या मिठाई उसके मुँह में चली जाएगी , समझो किसी ने मिठाई लेकर मुँह में डाल भी दी फिर भी वह चबाता नहीं है तो वह क्या गले के नीचे उतर जाएंगी , क्या बिना पुरुषार्थ के उसकी भूख खत्म हो जाएगी, आखिर उस मिठाई को चबाने का और गले के नीचे उतारने का तो पुरुषार्थ उसे करना ही पड़ेगा I कहा गया है कि :

नहीं सुप्तस्य सिंहस्थ प्रवेशंति मुखे मृगा

अर्थ सोए हुए सिंह के मुख में हिरण अपने आप नहीं आ सकता है उसे शिकार करने का पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा I

इसलिए कहा गया है : पुरुष हो पुरुषार्थ करो I

५) **नियतिवाद** : यह ज़रा गंभीर विषय है I जड़ चेतन रूप विश्व जगत के अटल नियमों को नियति कहते हैं I इसके अनुसार जितनी भी कार्य होते हैं सब नियति के अधीन होते हैं I सूर्य पूर्व ही में उदय होता है पश्चिम में क्यों नहीं ,पक्षी आकाश में उड़ सकते हैं हम क्यों नहीं , पशु के चार पैर होते है हमारे क्यों नहीं ,अग्नि की ज्वाला जलते ही ऊपर क्यों जाती है ,इन सब प्रश्नों का उत्तर केवल यही है कि विश्व प्रकृति का जो नियम हैं वह अन्यथा नहीं हो सकता है ,अगर होगा तो संसार से प्रलय आ जाएगा क्योंकि संसार की अपनी एक व्यवस्था है जो अब तक हुआ है जो हो रहा है वह जो होने वाला है वह नियत है I नियति के अटल सिद्धांत के समक्ष दूसरे सभी तुच्छ है अतः विश्व में नियति सबसे महान है I

नियतिवाद मानव मन को सर्वदा अनुकूल अविचल स्वच्छ रखने के प्रेरणा करता है I मन की तेजोमय आभा से हर क्षण प्रकाशित रहने का मंगलमय संदेश देता है , जीवन के सभी प्रकार के तनाव से मुक्त करता है , मनुष्य को कर्ताभाव त्यागने का पावन संदेश देता है यह बताता है कि शांतचित्त से प्राप्त कर्म कीजिए , यदि उस से होना है तो समय पर हो जाएगा और यदि उस से नहीं होना है तो वो नहीं

होगा I अनुकूल या प्रतिकूल दोनों परिणामों को सहर्ष स्वीकार करना चाहिये I किसी भी प्रकार की आकुलता की आवश्यकता नहीं है क्योंकि कर्ताभाव अशांति को जन्म देता है जो कुछ भी नियत वो आपको मिलना ही उसे संसार की कोई भी ताकत रोक नहीं सकती है क्योंकि वो ऐसा करने में समर्थ नहीं है I

सुखम वा यदि वा दुखम , प्रियम वा यदि वाप्रियम

प्राप्तम प्राप्त मुपासित , हृदये ना अपराजित

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS Original Research Article

समन्वयवाद भगवान महावीर ने इन सभी एकांत वादों के संघर्ष को बहुत ही अच्छी तरह से सुलझाया है I उनके अनुसार संसार में जो हो रहा है , वह पांचों के समन्वय से हो रहा है एक ही वाद अपने बल पर कार्य को सिद्ध नहीं कर सकता है बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि किसी एक का दुराग्रह छोड़कर सबका समन्वय स्वीकार करें I

जैसे पढ़ने वाले विद्यार्थी के लिए पांचों ही कारण आवश्यक है पढ़ने के लिए चित्त की एकाग्रता उसका स्वभाव है समय का योग भी दिया जाए पुरुषार्थ किया जाए अशुभ कर्म का क्षय हो व शुभ कर्म का उदय हो नियति का योगदान भी साथ हो तब भी वह पढ़ लिखकर विद्वान बन सकता है I

इस समन्वय कों भगवान महावीर स्वामी ने अनेकांतवाद का नाम दिया I

जैन सिद्धांत अनेकांत की संस्कृति है वस्तु कि सभी पहलुओं को देखना अनेकांत हैं I इनके अनुसार वर्तमान कर्म जिन्हें हम इस जन्म में इस समय में कर रहे हैं वह पिछले कर्मों का फल भी हो सकता है या स्वतंत्र कर्म भी हो सकता है आत्म तत्व के इस स्वतंत्र कर्तव्य

का यह आदर्श है कि जीव बंधा ही बंधा नहीं रहे स्वतंत्र भी काम कर सकें भाग्य की डोर से लटका न रहकर पुरुषार्थ भी कर सके I

अनेकांतवाद को केवल एक दर्शन के रूप में नहीं परंतु सर्वमान्य जीवन का धर्म के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय भगवान महावीर को जाता है I अहिंसा व अपरिग्रह के चिंतन में भी उन्होंने अनेकांत का प्रयोग किया I

अहिंसात्मक अनेकांत के अनुसार साधक के लिए सर्वथा हिंसा का निषेध किया है , किंतु जनकल्याण की भावना से किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कभी कभी परिस्थिति वश अनचाहे भी जो सूक्ष्म या स्थूल प्राणीघात हो जाता है उस विषय में भी उन्होंने कभी एकांत निवृत्ति का आग्रह नहीं किया , अपितु उसे हिंसा मानकर अर्थ दंड का नाम दिया क्योंकि उन्होंने हिंसा सिर्फ दृश्यमान प्राणी वध को ही नहीं बल्कि राग द्वेष की अंतर्वृत्ति को भी बताया I

परिग्रह के विषय में भी उनका विचार बहुत उदार व स्पष्ट था I उन्होंने मूर्छा ममत्व भाव के रूप में परिग्रह की एक स्वतंत्र व्यापक व्याख्या की I वे वस्तुवादी नहीं बल्कि भाववादी थे I वस्तु नहीं बल्कि भाव परिग्रह है I असत्य और रागात्मक विकल्प यही परिग्रह है I वर्तमान परिपेक्ष्य में अगर इसे देखा जाए तो ये बहुत सही लगता है I अगर लोगों के पास बहुत पैसा है तो यह उनके अच्छे कर्मों का उदय है लेकिन उनको इनसे ममत्व नहीं रखना चाहिए I समय समय पर लोगों की सहायता करना चाहिए , दान के पैसा खर्च करना चाहिए , ताकि वे अच्छे कर्मों का उपार्जन कर पाए उस धन से ममता व मूर्छा ना रखें व लोगों की सहायता करें ताकि सभी सुखी रह सके I

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS Original Research Article

अनेकांत का अर्थ है प्रत्येक वस्तु की एवं स्थिति को भिन्न भिन्न दृष्टि से देखना , समझना व परखना I प्रत्येक पदार्थ चाहे वह छोटे से छोटा रजकण हो या बड़े से बड़ा हिमालय हो , वह अनंत धर्मों का समूह है I यहाँ धर्म का अर्थ गुण है विशेषता है I एक आदमी काफी ऊंचा है तो क्या वह पहाड़ से बड़ा है , एक आदमी बहुत छोटा है तो क्या वह चींटी से भी छोटा है अतः हर एक चीज़ छोटी भी है व बड़ी भी हैं दूसरों की अपेक्षा I अतः एक सत्य व दूसरों का असत्य मानना बिल्कुल अनुचित है , क्योंकि सत्य अनंत हैं , विराट कोई भी अल्पज्ञानी सत्य के संपूर्ण रूप को नहीं जान सकता है , जो जानता है वह उसका केवल एक पहलू है एक अंश है I हम जो भी देखते हैं वह एकपक्षीय होता है ,अत: किसी दर्शन को एकांत रूप से पूर्ण व यथार्थ मानना व दूसरों को असत्य घोषित करना सत्य के साथ अन्याय होगा I एक ही समय पड़ी वर्षा की बूंदों का आश्रय के भेद से भिन्न भिन्न परिणाम देखा जाता है : जैसा कि स्वाति नक्षत्र में गिरी बुंदे सीप के मुँह में जाकर मोती बन जाती है और सांप के मुँह में जाकर विष बन जाती है I

एक पशु को खूंटे से बांधा जाता है तो वह सिर्फ एक रस्सी से बंधा होता है ,पर हम तो कषाय , के अहंकार के , राग द्वेश के अनंत खूंटों से बंधे रहते हैं जो दिखाई नहीं देते हैं पर वे बड़े मजबूत होते हैं I

क्रोध में कुछ भी सूजे नहीं , मान किसी को पूछे नहीं ,

शिक्षा किसी की भी रुचे नहीं , पाप से मनवा धूजे नहीं ,

परवश बना मन करता पुकार , मुझको तारो तारणहार

बंधन भले ही अनादिकाल इन हो अनंत हो प्रगाढ़ हो जब शुभ संकल्प आते हैं तो बंधन टूटते हैं व उसमें कोई देर नहीं लगतीI

वाल्मीकि जैसा डाकू क्षण भर में ही महर्षि बन जाता है

स्वयं करम करोतयाम ,स्वयं तत्फलमशंनुते

स्वयं भृमति संसारे , स्वयं तस्माद् विमुच्यते

यह आत्मा स्वयं ही कर्म करने वाला है और स्वयं ही उसका फल भोगने वाला है , स्वयं ही संसार का परिभ्रमण करता है और एक दिन धर्म साधना के द्वारा स्वयं ही संसार के बंधन से मुक्त हो जाता है I

आत्मा परमात्मा में कर्म ही का भेद ,काट दे यह कर्म तो फिर भेद हे ना खेद है

डॉक्टर मैक्समुलर के अनुसार

यह तो सुनिश्चित हैं कि कर्मवाद का प्रभाव मनुष्य पर ज्यादा है यदि किसी को यह पता चल जाए कि वर्तमान अपराध के सिवाय जो मेरे साथ हो रहा है वह मेरे पूर्व कृत कर्मों का ही फल है तो वह शांत भाव से कष्ट को सहन कर लेगा व भविष्य के लिए भी

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XI, Special Issue– II Nov – Dec 2022

OPEN ACCESS Original Research Article

समृद्धि एकत्र कर लेगा तो उसे भलाई के रास्ते पर चलने की प्रेरणा स्वतः ही मिल जाएगी I अंतर की तृष्णा को जब शांत कर दिया जाए तो मुक्ति के अनंत आनंद की हृदय में अनुभूति होगी I

भगवान महावीर का यह दार्शनिक चिंतन सिर्फ दर्शन व धर्म के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन को स्पर्श करने वाला हैं इसी अनेकांत दर्शन के आधार पर हम गरीबों अल्पसंख्यकों को न्याय दे सकते हैं , उनके अस्तित्व को स्वीकार कर उन्हें भी विकसित होने का अवसर दे सकते हैं I आज विभिन्न वर्गों में राष्ट्र , जाति , धर्मों में जो कलह व संघर्ष है उसका मूल कारण एक दूसरे के दृष्टिकोण को नहीं समझना है i व्यक्ति एकांत दुराग्रह को छोड़ दें तो अनेकांत इन सब में समन्वय स्थापित कर सकता है , ये संकुचित व अनुदान दृष्टि को विशाल बनाता है ,उदार बनाता है और यही विशालता व उदार भी परस्पर सौहार्द सहयोग सद्भावना एवं समन्वय का मूल प्राण हैI

संदर्भ:

- जैन तत्व दर्शन
- आचार्य चंदना
- उत्तराध्ययन सूत्र
- वृहद आलोयना
- सम्यक दर्शन
- प्रार्थना संग्रह

Cite This Article:

रैना राकेश हिंग,(2022) सार, ***Electronic International Interdisciplinary Research Journal,*** *Volume No. XI (Special Issue -II), 85-91.*